ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

सतत् जीविकोपार्जन योजना आई परिवार में खुशियाँ लाई
(पृष्ठ – 02)

अपने हाथों लिखी अपनी तकदीर
(पृष्ठ – 03)

संगठन से मिली पहचान सपने हो रहे साकार
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अगस्त 2023 ।। अंक – 25

सतत् जीविकोपार्जन योजना : रोजगार हेतु एक नया दिशा

बिहार में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत वित्तीय वर्ष 2018–19 में की गयी। योजना अन्तर्गत जीविकोपार्जन संवर्धन, क्षमता वर्द्धन एवं वित्तीय सहायता तथा अभिसरण आदि के माध्यम से अत्यंत निर्धन परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तीकरण हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। जीविका द्वारा इस योजना का क्रियान्वयन पूरे राज्य में किया जा रहा है। अबतक राज्य के 1 लाख 62 हजार से अधिक अत्यंत निर्धन परिवारों को इस योजना से जोड़कर उनके आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु कार्य किए जा रहे हैं। चयनित लाभार्थियों को विभिन्न जीविकोपार्जन गतिविधियों से संचालित करने में सहयोग दिया जा रहा है। जीविकोपार्जन गतिविधि के अंतर्गत कई लाभार्थी पशुधन, कृषि एवं अन्य गतिविधियों से भी अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर बना रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा दिसंबर 2022 शहरी क्षेत्र में भी सतत् जीविकोपार्जन योजना का क्रियान्वयन करने का निर्णय लिया गया। जीविका द्वारा शहरी क्षेत्र में राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के साथ समन्वय स्थापित कर योजना का क्रियान्वयन किया जा रही है। इस कार्य में सहयोग हेतु ब्राक (BRAC) एवं जीविका के बीच एकरारनामा हस्ताक्षर किया गया है जिसके तहत शहरी क्षेत्र में सतत् जीविकोपार्जन योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु राज्य स्तर पर परियोजना प्रबंधन इकाई की स्थापना की जाएगी। विभिन्न विषय विशेषज्ञों के द्वारा सहयोग प्रदान किया जाएगा ।

जीविका ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लाभार्थियों को चिन्हित कर ग्राम संगठन से अनुशंसा के बाद उनके रोजगार के लिए एक नई राह दिखाई है। एक ओर शराब के कारोबार में कम समय में अधिक पैसा मिलने का लोभ तो दूसरी ओर समाज की मुख्यधारा से जुड़ कर सामान्य जीवन जीते हुए अपने अंदर की बुराइयों को खत्म करने की शक्ति लाना काफी जद्दोजहद का काम था। सतत् जीविकोपार्जन से जुड़े मास्टर रिसोर्स पर्सन और जीविका कर्मियों ने दीदियों को व्यक्तिगत तौर पर हमेशा सहानुभूति के साथ जीवन में संघर्ष की राह को चुनने और सामान्य जीवन जी कर जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए प्रेरित करने का काम किया। व्यवसाय से जुड़ने से पूर्व उनके आत्मशक्ति और आत्मविश्वास को बढ़ाने विभिन्न प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से क्षमतावर्धन किया गया। गरीबी का दंश झेल रहे वैसे परिवारों को जीविका के माध्यम से सतत् जीविकोपार्जन योजना अंर्तगत चयनित किया गया जिनमें से ज्यादातर समूह के साथ नहीं जुड़े थे। ऐसे परिवारों को रोजगार दिलाने के लिए कई विकल्प सुझाए गए जैसे दुकान, बकरी पालन, कृषि आदि ताकि वे अपने जीविकोपार्जन गतिविधि संचालित कर नियमित आय अर्जित कर सकें। शुरुआत में यह बहुत कठिन था लेकिन हमेशा सार्थक प्रयास और आत्मविश्वास के साथ दीदियों से रोजगार की चर्चा उनमें एक नई ताकत का एहसास हुआ। किसी ने किराना दुकान खोला, किसी ने गाय–बकरी पाला तो किसी ने खेती करनी शुरू किया। इस बदलाव से उन्हें बहुत कष्ट हुआ जो शराब की अवैध बिक्री कर पैसे कमाते थे और अब कठिन मेहनत कर पैसे कमाने पड़ रहे हैं। लेकिन जीविका कर्मियों और कैडरों द्वारा उनकी निरंतर निगरानी और सहयोग का असर है ऐसा है कि आज कई दीदियाँ हैं जो अपने बीते दिनों को याद भी नहीं करना चाहती हैं। अपने मन में एक मुस्कान लिए समाज को संदेश दे रही हैं कि अगर भटके हुए लोगों को सही राह दिखलाया जाए तो समाज के मुख्यधारा में जुड़ कर सम्मान की जिंदगी जीना कोई बड़ी बात नहीं है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना आई परिवार में खुशियाँ लाई

मौसम कुमारी नवादा जिला के रोह प्रखंड के मोरमा गाँव की रहने वाली है। उनके परिवार में उनके पति के अलावा एक बेटा और एक बेटी है। मौसम कुमारी एवं उनके पति दोनो दिव्यांग हैं। दिव्यांग रहने के कारण मजदूरी का काम नही कर पाते थे। दिव्यांगता पेंशन मौसमी कुमारी एवं उनके पति दोनों को मिलता है, उसी से उनके परिवार का गुजर बसर होता था। बेसहारा अवस्था मे होने के कारण भर पेट खाना नही मिलता था। मौसम दीदी दुर्गा जीविका समूह मे जुड़ी हुई थी पर पैसा नही रहने के कारण समूह मे साप्ताहिक बचत नहीं कर पाती थी। दिन–प्रतिदिन उनकी स्थिति और भी बदतर हो रही थी।

इस बीच अगस्त 2018 में दीपक जीविका महिला ग्राम संगठन के द्वारा उनके परिवार के दयनीय स्थिति को देखते हुए सतत् जीवकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रुप में चयन किया गया। ग्राम संगठन द्वारा योजना के तहत रोजगार शुरू करवाने के लिए उन्हें जीविकापार्जन निवेश निधि के रूप में 20000 रुपये की उत्पादक संम्पति एवं जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रुप में सात माह तक एक–एक हजार रुपये दीपक जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से उपलब्ध करवाया गया। फिर योजना के अंतर्गत व्यापार सम्बंधित प्रशिक्षण भी दीदी को दिलवाया गया। जिसके बाद ग्राम संगठन द्वारा किराना सामान खरीदकर दुकान शुरु करवाया गया। इन्होने घर में ही अपना दुकान चलाना प्रारंभ किया। इस व्यापार से दीदी प्रतिदिन लगभग 200 से 300 रूपए बिक्री करने लगी। कम बिक्री होने के कारण मौसम कुमारी किराना के साथ–साथ मनिहारी का सामान भी बेचने लगी। जिसके बाद रोजाना 500 से 600 रूपए तक बिक्री होने लगी। इस व्यवसाय से उन्हें प्रतिदिन 150 से 200 रुपये के बीच आमदनी हो रहा है। अब उनके परिवार का भरण–पोषण ठीक से हो रहा हैं। दुकान की सम्पति को बढ़ाकर उन्होंने 95 हजार रुपये से अधिक कर ली है और वह अपने दोनों बच्चे को पढ़ने के लिए स्कूल भी भेज रही है।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ी रजनी देवी

कटिहार जिला के कटिहार सदर प्रखंड के भावाड़ा गाँव की रजनी उन सफल महिलाओं में से एक है जिन्होंने जीविकोपार्जन के विभिन्न साधनों को अपनाकर अपने घर की आमदनी बढ़ाई है। रजनी देवी आज दुकान एवं बकरी पालन कर लगभग छह हजार रुपये प्रतिमाह आमदनी कर रही है।

रजनी देवी अपने बीते दिनों को याद करते हुए बताती है कि पूर्व में इनके पति को शराब की बुरी लत थी। प्रतिदिन मारपीट–झगड़ा उनके लिए आम बात थी। एक दिन दीदी परेशान होकर अपने दोनों बेटा और एक बेटी के साथ मायके आ गई। शराबी पति द्वारा नशे में घर में आग लगा दिया, जिससे उनका पूरा घर जल गया। गांव वाले ने किसी तरह इनके पति को पकड़कर पुलिस के हवाले किर दिया। पति को सजा होने के बाद दीदी अपने बच्चों के भरण–पोषण के लिए खेतों में मजदूरी करना शुरू कर दिया। जैसे–तैसे जीवन व्यतीत हो रहा था। फिर एक दिन ओम जीविका महिला ग्राम संगठन की कुछ दीदियों ने इनसे बात की और कहा कि ग्राम संगठन की मदद से आपको कोई रोजगार करवाया जायेगा, जिससे आप अपने परिवार का जीवन यापन कर सकती हैं। सबसे पहले दीदी को समूह में जुड़वाया गया, ग्राम संगठन की मदद से इनके इच्छानुसार गांव में ही किराना दुकान खोलने के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत जीविकोपार्जन निवेश निधि मद से उत्पादक संम्पति प्रदान की गई। दीदी ने अपनी मेहनत और लगन से अपने व्यवसाय को संचालित किया।

इस व्यवसाय से दीदी अपने बैंक खाते में 26000 रूपये जमा कर ली है और इनके पास अब डेढ़ लाख से अधिक की सम्पति हो गयी है। उनका परिवार सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे राशन कार्ड, पेयजल, उज्जवला योजना से भी लाभान्वित हुई है। उनके तीनों बच्चे पढ़ाई भी कर रहे हैं।

अपने हाथों लिखी अपनी तकदीर

बिन्दु देवी शेखपुरा जिला के शेखोपुर सराय प्रखण्ड अंतर्गत ओनामा पंचायत के अस्थाना गांव की निवासी हैं। इनके पति दिव्यांग होने के कारण कोई काम नहीं कर पाते हैं जिस कारण से घर–परिवार चलाने के लिए दीदी को दूसरे के घर में बर्तन, कपड़े और घर की साफ सफाई का काम करती थी। कई बार तो दीदी आस–पास के घरों से मांग कर अपने बच्चों का पेट भरती थी।

वर्ष 2019 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लाभार्थी के रुप में उनका चयन किया गया। बिन्दु दीदी ने रोजगार करने के लिए मनिहारी दुकान करने का निर्णय किया। योजना अंतर्गत दीदी को विशेष निवेश निधि के तहत 10 हजार रुपये मिला जिससे उन्होंने गांव में ही दूसरे के घर में किराए पर दुकान की शुरुआत की।

इसके बाद ग्राम संगठन द्वारा जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत प्राप्त 20 हजार रुपये से दुकान के लिए मनिहारी सामग्री की खरीदारी कर बिन्दु दीदी को दिया गया। इसके अलावा बिंदु दीदी को जीविकोपार्जन अंतराल सहायता राशि के रुप में शुरुआत में सात माह तक 1 हजार रुपए प्रति माह मिला। बिन्दु दीदी अपने मनिहारी दुकान में शुरू से ही खूब मेहनत करने लगी, जिससे शुरुआती दौर में ही दुकान में अच्छी खासी संख्या में ग्राहक बन गए और बिक्री अच्छा होने लगा। प्रतिदिन 1200 से 1500 रुपये तक की बिक्री होने लगा, जिससे आमदनी भी लगभग 200 से 300 रुपये प्रतिदिन होने लगा। वह अपने दुकान में बिक्री के हिसाब से बचत भी करने लगी। आस–पास के गांव में जब मेला लगता है तो उसमें वह मनिहारी, कपड़े और खिलौनों का दुकान लगा कर 4 हजार से 6 हजार रुपए के लगभग की बिक्री कर लेती हैं। आज बिंदु दीदी की परिसंपत्ति लगभग 1 लाख 35 हजार रुपये की हो गई है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिले व्यवसाय से बिंदु दीदी काफी खुश हैं। उन्हें तथा उनके बच्चे को प्रतिदिन अब भरपेट दो वक्त का पौष्टिक भोजन मिल रहा है।

जीविका के सहयोग से रूबी दीदी बनी आत्मनिर्भर

मुंगेर जिला के तारापुर प्रखंड के रूबी दीदी के पति के असमय मृत्यु हो जाने के बाद उनके घर की स्थिति बहुत ही खराब हो गयी था। दीदी इससे संभल पाती की उससे पहले उनके एक मात्र पुत्र की सड़क दुर्धटना मे मृत्यु हो गई। ऐसे मे रूबी देवी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था की वह अपने दो बेटियों और अपने आप का भरण–पोषण कैसे करें। रूबी दीदी को कहीं से कोई उम्मीद की किरण दिखाई नहीं दे रहा था। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

अक्टूबर 2019 में जीविका द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना के लिए लाभार्थियों के चयन हेतु अभियान चलाया गया, इनके परिवार की दयनीय स्थिति को देखते हुए इनको सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में चयनित किया गया। योजना से जुड़ने के बाद ग्राम संगठन के माध्यम से रूबी दीदी को 10000 रूपये दिये गये जिससे वो दुकान खोलने के लिए बुनियादी ढॉचे का निर्माण किया। इसके बाद दीदी को दूध एवं दही का दुकान के लिए 20000 रूपये की उत्पादक संम्पति भी दी गई। दीदी को योजना से मिले सहयोग से अच्छी आमदनी होने लगी। धीरे–धीरे रूबी दीदी दूध दही के साथ घी, खोवा और पनीर जैसे उत्पाद को भी बना कर मार्केट में बेचना शुरू कर दी। रूबी दीदी की कड़ी मेहनत और लगन से आज उनके यहां से प्रतिदिन 50 किलो दही और 5 किलो घी बिक्री हो रही है जिससे दीदी को लगभग 15000 रुपये प्रति माह आमदनी हो रही है।

आज के समय मे रूबी दीदी की संपति बढ़कर करीब 55000 रुपये हो गया है। दीदी के पास अब रहने के लिए अपना घर है। वह अपनी बेटी को पढ़ने के लिए स्कूल भी भेज रही है। दीदी को अन्य सरकारी योजनाओं जैसे आयुष्मान भारत कार्ड, विधवा पेंशन एवं राशन कार्ड का भी लाभ मिला रहा है। आज के समय में रूबी दीदी अपने परिवार के साथ खुशी पूर्वक रह रही है।

संगठन से मिली पहचान अपने हो रहे साकार

जीविका के माध्यम से संचालित बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी योजना सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार में गरीबी उन्मूलन में प्रभावी साबित हुई है। गाँव के अत्यंत गरीब परिवार के महिलायों को जीविका समूह से जोड़कर सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत स्वरोजगार एवं स्वावलंबन की नई राह दिखाई जा रही है। योजना से जुड़कर यह महिलाएँ स्वावलंबन के तहत समाज में सम्मानजनक जीवन जीते हुए अपने बच्चों का बेहतर भविष्य बना रही हैं। लखीसराय जिला अंतर्गत रामगढ़ चौक प्रखंड स्थित शिवसागर गाँव की लीला देवी भी सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित होने वाली महिलाओं में से एक हैं। लीला देवी की पहचान अब एक कुशल व्यवसायी के रूप में है। लीला को यह पहचान जीविका संपोषित ग्राम संगठन की सदस्यों के सहयोग से मिली है। लीला के पति खेतिहर मजदुर थे। वर्ष 2015 में उनकी असामयिक मृत्यु हो गयी। लीला के कन्धों पर दो बेटियों एवं एक बेटा की परवरिश की जिम्मेवारी थी। मजदूरी करते हुए बच्चों को किसी तरह भोजन उपलब्ध करा पाती थी।

वर्ष 2019 में सतत् जीविकोपार्जन योजना से आच्छादित करने हेतु सर्वेक्षण में लीला के नाम का अनुमोदन सहेली जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा किया गया। इन्हें शिव गुरु जीविका स्वयं सहायता समूह से जोड़ा गया। ग्राम संगठन से किराना दुकान के लिए 20 हजार रुपये का किराना सामान मिला। विशेष निवेश निधि के अंतर्गत 10 हजार रुपये की राशि के अलावा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता निधि के तहत एक–एक हजार रुपये सात माह तक दिया गया। जीविका से जुड़े संगठन एवं सदस्यों के सहयोग से दुकान में बिक्री दिनों–दिन बढ़ती रही। उन्हें प्रति माह 6 से 7 हजार रुपये का मुनाफा हो रहा है। मुनाफे की राशि से श्रृंगार दुकान भी खोली है। अगस्त 2021 में दूसरी क़िस्त के तौर पर उन्हें 18 हजार रुपये की राशि भी मिल गयी।

लीला देवी ने सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत ग्रेजुएट दीदी बनने के प्रावधानों एवं मापदंडो को भी जीविका के सहयोग से पूरा किया है। लीला देवी की झोपड़ी अब पक्के मकान में तब्दील हो गयी है। घर में शौचालय भी है। सबसे बड़ा बेटा 12 वीं क्लास में और दोनों बेटियाँ क्रमशः 11 वीं और 10वीं की छात्रा हैं। लीला देवी दुकान में बिक्री हेतु सामान स्वयं बाज़ार से लाती हैं। इस दौरान बेटियाँ दुकान संभालती हैं। लीला देवी को विधवा पेंशन भी मिलने लगा है। दुकान की आमदनी में से प्रति सप्ताह वह डेढ़ से दो सौ रुपये बचत भी कर रही हैं। वह अपने समूह में भी 10 रूपये प्रति सप्ताह बचत करती हैं। इस बदलाव से लीला देवी अपने क्षेत्र में महिला स्वावलंबन की नाजिर बन गयी है।

जीविका परियोजना से मिले सहयोग एवं मार्गदर्शन के बाद लीला की बढ़ती परिसंपत्ति एवं वार्षिक आय के आंकड़ो पर एक नजर –

वित्तीय वर्ष	कुल परिसंपत्ति (रूपये में)	वार्षिक आय (रूपये में)
2020 – 2021	96,791	1,35,000
2021 – 2022	99,999	1,74,000
2022 – 2023	1 लाख से ऊपर	1,80,000

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार
- श्री मनीष कुमार – प्रखंड परियोजना प्रबंधक